United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb & Mar),2026

चरित्र का निर्माण मानवीय मूल्यों से

BGN KAVITHA

Article Received:16-01-2026 Article Modified:20-02-2026
Article Accepted:24-02-2026 Article Published:26-02-2026
DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.1.207

सारांश

मानव जीवन में चरित्र का विशेष महत्व है, क्योंकि यही व्यक्ति के व्यक्तित्व, आचरण और सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनता है। प्रस्तुत लेख में मानवीय मूल्यों—सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम और अहिंसा—के माध्यम से चरित्र निर्माण की प्रक्रिया का विवेचन किया गया है। लेख में बताया गया है कि आधुनिक युग में भौतिक प्रगति के बावजूद नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण समाज में अशान्ति और असंतोष बढ़ रहा है। सत्य और धर्म व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ बनाते हैं, शान्ति मानसिक संतुलन प्रदान करती है, प्रेम मानवता को सुदृढ़ करता है तथा अहिंसा समस्त प्राणियों के प्रति करुणा और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करती है। लेख में महात्मा गांधी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्य महान विभूतियों के जीवन से प्रेरणा लेते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि उज्ज्वल चरित्र ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति है। निस्वार्थ सेवा, त्याग, भक्ति, प्रार्थना तथा आत्मचिंतन के माध्यम से व्यक्ति अपने चरित्र को परिष्कृत कर सकता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानवीय मूल्यों का व्यावहारिक जीवन में पालन ही सुदृढ़ एवं आदर्श चरित्र निर्माण का आधार है, जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

Keywords:चरित्र निर्माण ,मानवीय मूल्य ,सत्य एवं धर्म ,प्रेम और अहिंसा ,नैतिक शिक्षा

सद्गुण साधकों के लिए प्रशस्त मार्ग का निर्माण करते है। भूत काल के उपन्य युगों की अपेक्षा कलियुग उन अनेक मार्गो को प्रस्तुत करता है जिनके द्वारा मनुष्य विवेक अर्जित करता है। यदि शिक्षा की आवश्यकता हुई तो अनेक विद्यालय और संस्थाएँ हैं जो उसकी पूर्ति करती है। यदि धन जिसके पीछे आज व्यक्ति भाग रहा है कि बात है कि उसकी कमाने के भी अनेक ढंग है जिनके द्वारा सम्मानपूर्वक और परिश्रम से धन कमाया जा सकता है फिर भी इसकी बावजूद हमे मानवता की सुख शांति में कोई वृद्धि दृष्टिगोचार नहीं होती है। वास्तव में आज बीते युग की अपेक्षा कही अधिक अशांती और दुःख धेन्य है इसका कारण है मनुष्य के व्यवहार और आचरण में निहित है। आज का मानवजीवन स्वयं इसके लिए दोषी है।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb & Mar),2026

सद्कर्म मनुष्य जीवन की मुख्य कुंजी होती है। यह नैतिकता के पथ में रहने की दिशा है जो कि उसके मृत्यु के पश्चात् भी लम्बे समय तक दूसरों को याद आते हैं। यदि व्यक्ति में नैतिकता नहीं है तो वह व्यक्ति मृत के समान है। पाँच मानवीय मूल्य है जिनकी अचरण करने से हम चरित्रवान बनअकते हैं। वे पाँच मुन्य है- सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम, अहिंसा ।

1- सत्य :- एक ही और अपरिवर्तनशील है। सत्य हमारी अतः करण में निहित होती है। हमारी वाणी झूठी हो सकती है मगर हमारा अतः करण हमेशा सत्ता होता है। हम सदा अच का पालन करना चाहिए । सत्यहरिखन्द्र सत्य का पालन करके चरित्र में चिरस्मरणीय रहे।

२. धर्म :- सत्य का अनुकरण करता है। हम जैसा बोलते है वैसा ही करना ही धर्म का पालन करना है। जो काम हमे भौंपे गए है उन्हे पुरी लगन और जिम्मेदारी से और अपनी पूरी क्षमता के अनुसार करना ही धर्म का अभ्यास कहलाता है। महाभारत में युदिष्टर को धर्म का स्वरूप मानते हैं।

3. शान्ति :- शान्ति उस स्थिति का नाम है जब हमारा शन्द्रियों पर नियंत्रण हो जाता है और वे संतुलित होती है। नियंत्रित मन वह होनी है जो कि भूतकाल या भविष्य में विचार नहीं करता वरन् अपने वर्तमान के लिए संतुष्ट रहता है और कृतज्ञ रहता है। शान्त मन परेशान करने वाली तरंगो से प्रभावित नहीं होती है।

4. प्रेम: भगवान सत्यसाई बाबा हमे बार-बार बताते है कि प्रेम इस मंमार का आधार है। वे इस पृथ्वी की तुलना एक बडी फैक्टरी से करते है जहा प्रेम का उत्पादन होता है। प्रेम के बिना जीवन अधुरी है। चाहे माँ का अपना संतान से हो, एक पति को अपनी पन्ती से या देशभक्त को अपने देश से एक भाई को अपने बहन से या वक्ति को वस्तुवों से परंतु हमे ईश्वर तक पहुँचने का प्रकृत्ति या निर्जीव एक मात्र साधन प्रेम ही है।

5. अहिंसा :- यह न केवल अपने सह बन्धुओं के साथ सौद्य के साथरहने का अभ्यस है वरन् हमें पशु-पक्षियों, पेड-पौधों और खनिज - पदार्थो वस्तुतः सारे पर्यावरण के साथ सामन्जस्य के साथ रहने का अभ्यास करना चाहिए । भगवान सत्य साई बाबा का महामंत्र "परहित सदा सर्वत्र, परपीड़ा कदापि नहीं" (Help ever hurt never) सरल शब्द में एक महान संदेश देता है। सहनशीलता, धैर्य, समबुद्धि हमें अहिंसा का अभ्यास करने में सहायक होती है। गाँधी जी ने स्वतन्त्रता संग्राम में "अहिंसा द्वार असहयोग अस्त्र को प्रयोग करके हमारे लिए अहिंसा के मार्ग पर चलने का एक अच्छा उदाहरण पेश किया।

सृष्टि की विकास क्रम में मानव एक सर्वोत्तम कृति है। इसे सार्थक सिद्ध करने के लिए अध्यात्मिक प्रयास आवश्यक है। प्रयास भी ऐसा जो शुद्ध और पवित्र हो। इस प्रकार के जीवन के लिए चरित्र सर्वधिक महत्वपूर्ण है। चरित्र ही जीवन को अमरत्व प्रधान करता है। यह मृत्यू परांत भी जीवित रहता है। कुछ लोगों का कहना है कि ज्ञान ही चरित्र है भगवान सत्यसाई बाबा कहते हैं कि चरित्र ही शक्ति है। ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति से उत्तम चरित्र की अपेक्षा की जाती है अतः प्रत्येक को निर्मल चरित्र प्राप्त करने की आकाक्षा रखना चाहिए । ऐसा निर्मल जिसमें किसी भी प्रकार का लेश मात्र भी दोष न हो। भगवान गौतम बुद्ध, ईसा, शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद जैसे महान संत, ऋषि और भगवाने के भक्त आज

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb & Mar),2026

भी लोगों के आदर और सम्मान के पात्र बने हुए है इनके प्रत्येक का चरित्र ही है जिससे कि वे आज भी वंदनीय है। चरित्र के अभाव में संपत्ति, शिक्षा, सामाजिक स्थिति ये सभी निरर्थक हो जाते हैं। एक पुष्प है उसकी सुगंध के कारण ही उसकी महत्ता और मुल्यांकन किया जाता है।

कवि, चित्रकार, कलाकार और वैज्ञानिक अपने अपने क्षेत्र में महान प्राप्त करलेते है परंतु चरित्र के बिना समाज में उन्हे आधरणीय स्थिति नही प्राप्त होती है। इसमें संदेह करने की स्वाभाविक है कि क्या आज समाज में इन्हे आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उनमें वह चारित्रिक उज्वलता है कि जिसे हम आवश्यक मानतें है परंतु हम उस समाज और चरित्र के संबंध में चर्चा करे तो कुछ स्थाई अपरिवर्तनशील मूल्यों को आदर्शमानकर चलते है सामन्यतय समाज समय समय पर कुछ मून्यों का मान परिवर्तन की साथ ही चरित्र का आदर्श भी फॉशन की तरह बदलती रहती है।

परंतु उज्वल निर्मल चरित्र का मूल रूप एक शाश्वत सत्यम बना रहता है। समाज मे चाहे जैसे उथल पुथल हावे वह सदा वैसा ही रहता है। इस प्रकार ये अमर रहता है क्यों कि इसका संबंध एक ओर अमरतत्व से रहता है। जिसे आत्मा कहते हैं। आत्मा में अहं शब्द का मूल है। 'अहं' का अर्थ है 'मैं'। मैं और अहंकार, आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में आत्मा से सम्बद्ध है। आत्मा अगर पितामह है तो अहं पुत्र है तथा मन परपौत्र है। आत्मा को कोई वस्तु प्रभावित नहीं कर सकती ।

प्रेम, धैर्य, सहनशीलता, लगन, उदारता से ही निर्मल, उज्वल चरित्र का विकास होती है। ये सर्वोच्छ महान गुण है जिनका आदर सदा होनी चाहिए। हमारे सैकंडो छोटे-मोटे दैनिक आचरण स्थायित्व पाकर हमारे स्वभाव का अंग माने जाते है। इन स्वभावों से हमारे बुद्धिध को आकार मिलता है। वे हमारे दृष्टिकोण और जीवन को प्रभावित करते हैं।

हम अपनी कल्पनाओं की जो उदेढवुन करते है उसे अपने आदर्श बना लेते हैं, उसे अपनी महत्व कांक्षा की एक अंग मानलेते है। इससे हमारे मस्तिष्क पर एक अमिट प्रभाव पढ़ता है और हमारे ज्ञान भी इनकी कारण विकृत हो जाता है। हमारे चारों ओर का संसार भी तदानुकुल होने लगता है अतः इसी चित्र में हमारी आसक्ती बढ़ जाती है। मनुष्य के वर्तमान अपने भुत काल का परिणाम है और यह उनके आदतो कर के कारण है जिन्हें हमने धीर्घ कालीन जीवन में धीरे-धीरे विकसित कर लिया है। चरित्र जो कुछ बनगया है उसका स्वरूप और स्वभाव चाहे जैसे हो इसे कल्पना और मतत् चिंतन द्वारा निश्चित ही परिवर्तन किया जा सकता है।

किसी भी मनुष्य की सुधार की सीमा की परी नहीं होती। रत्नाकर जैसा दास्यु वाल्मीकी त्रऋषि बनगया। किसी भी मनुष्य की दृष्टता सुधार की सीमा की इच्छिक प्रयास के द्वारा आदानो को बदला जासकता है और चरित्र को निखारा जा सकता है। मनुष्य के अंदर अपने दुष्ट प्रवृत्तियों को पूर्ण रूप में बदलजाने की क्षमता रहती है।

निस्वार्थ सेवा, त्याग, भक्ति, प्रार्थना और विवेचन के द्वारा हम अपने चरित्र को निर्माण कर सकते हैं। सभी अध्यात्मिक साहित्य, काव्य, महाकाव्यों, ग्रंथों और पत्रिकाओं का एक मात्र का लक्ष्य यही होती है कि चरित्र की आतंरिक स्वभाव का विवेचन करे, उसके विविधताओं और प्रक्रियाओं का विश्लेषण करे और ऐसे उपायों को सुझावें जिससे इसे सुधार कर मानव में नित्य, शुद्ध, बुद्ध, आनंदमय से संयुक्त होने का उत्साह जागृत कर सकते है।

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb & Mar),2026

यह स्पष्ट होता है कि चरित्र का निर्माण पत्रिका के परायण मात्र से नहीं बनता किसी भी पुस्तक हम अपने व्यवहारिक जीवन में आचरण करने वाले मानवीय मूल्यों में ही होता है। हम अपनी जो भी कार्य को पुरा लगन से और इच्छा से आनंद से करना चाहिए। मस्तिष्क, हृदय और हाथ कार्यक्रम उस आधार-भुत नींव को तैयार करता है जिस पर मानवीय मूल्यों का पोषण करते हुए चरित्र का निर्माण होता है और संबंधित होता है।

Reference:

1) प्रेमवाहिनी By भगवान सत्यसाईबाबा कनविनर श्री सत्यसाई साधना ट्रस्ट प्रशांति निलयम, ए.पि.

2) मस्तिष्क, हृदय और हाथ कय आनन्द स्वरुप मैनी, U.P.

3) सनातन सारधि मासिक पत्रिका, ए.पि.

4) गीता वाहिनी भगवान सत्यसाईंबाबा द्वारा

5) सम्मर शवर्स इन वृंदावन, ए.पि.

6) श्री सत्यसाई सनातन संस्कृति, ए.पि.

7) भक्ति योग रत्नावली, श्री सत्य साई बुक्स एण्ड पब्लिकशन ट्रस्ट, मध्यप्रदेश